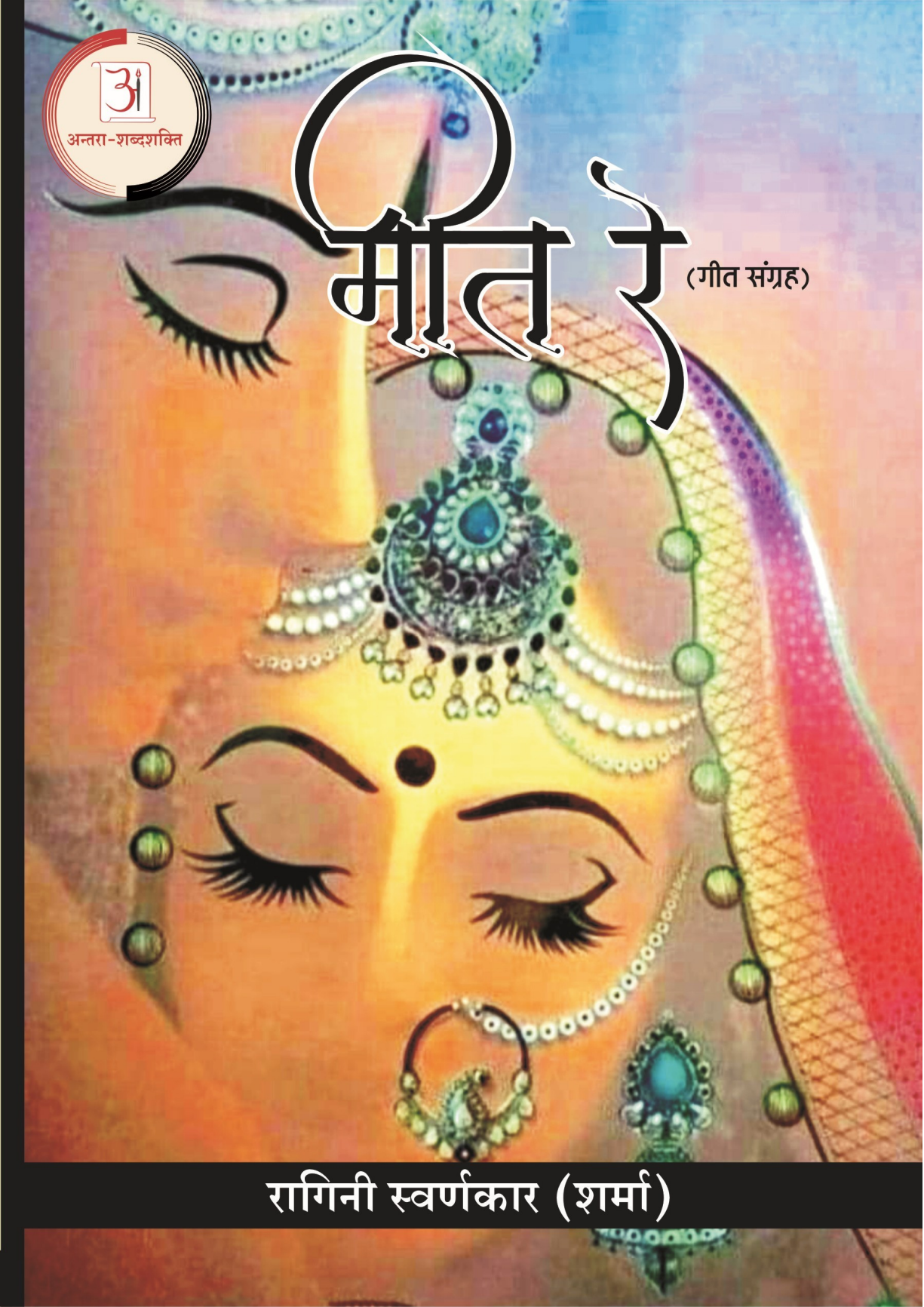

अन्तरा-शब्दशक्ति

मीत रे

(गीत संग्रह)

रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)

मीत रे,...

(गीत संग्रह)

रागिनी स्वर्णकार(शर्मा)

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी, मध्यप्रदेश

ISBN- "978-93-86666-70-3"

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन
मुख्य कार्यालय - १५ नेहरु चौक वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१
दूरभाष- (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो) ९४२४७६५२५९
अणुडाक- antrashabdshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com
प्रथम संस्करण २०१९- रागिनी स्वर्णकार(शर्मा)
मूल्य - ६०.०० रुपये

आवरण चित्र- संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

MEET RE,.. BY RAGINI SWARNKAR SHARMA

वैधानिक चेतावनी - इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रमणिका

	भूमिका	5
1.	मीत रे	7
2.	आजा मेघा	8
3.	प्राण देकर शहीदों ने	9
4.	मुस्काने हैं महाकाव्य सी	10
5.	तुम याद बहुत आये	11
6.	नीर नयन में	12
7.	प्रीत ही हूँ गुनगुनाती	13
8.	तेरा सम्बल प्यारा लगता है	14
9.	उर पूजन का थाल हुआ	15
10.	दे जाता है उपहार मुझे	16
11.	पहली बार छुआ सावन ने	17
12.	मन की कोकिल	18
13.	सब कुछ ठहर गया लगता है	19
14.	सुंदर पावन धरा भारती	20
15.	मैं गुहार अचानक कर बैठी	21
16.	मोहना तेरी छबि को मैने	22
17.	न जाना दूर तुम मुझसे	23
18.	गीत प्रणय के कैसे गायें	24
19.	जब मधुर सुहानी भोर हो	25
20.	सुबह लगे सोनाली सी	26
21.	सावन रूप बहार	27

22. दो लफ्जों की है दिल की कहानी 28
23. जबसे तुम आये जीवन में 29
24. पल में सदियाँ जी लेती हूँ 30
25. चितवन वन्दन करती है 31
26. जब से मैंने प्राणों में प्रिय 32

भूमिका

हरे-भरे वृक्षों की पंक्तियां, रंगबिरंगे फूल,चारों ओर फैली पर्वत श्रेणी, जिनके पीछे से प्रतिदिन सूर्य आकर अपनी सुनहरी आभा डालता है, जहां स्वच्छ जलराशि कलकल के गीत गाती है, जहां स्वछंद पशुपक्षी उन्मुक्त भाव से अपनी स्वर ताने छेड़ा करते हैं, जहां ऊषा अपनी तरुणाई पर इठलाती है। यही है प्रकृति और प्रकृति में एक नैसर्गिक संगीत विद्यमान है। प्रकृति के समीप रह कर जब व्यक्ति प्रेम में आल्हादित होता है तो स्वयम गीत फूट पड़ते हैं।

महाकवि निराला ने गीतिका की भूमिका में कहा है- गीत सृष्टि शाश्वत है। समस्त शब्दों का मूल कारण ध्वनिमय ओंकार है। इसी निःशब्द-संगीत से स्वर सप्तकों की भी सृष्टि हुई। समस्त विश्व, स्वर का पूंजीभूत रूप है। गीत मन की मुक्त अवस्था की अभिव्यक्ति है।

गीत कविता का एक निजी स्वर है जो सहज, सीधा, अकृत्रिम होता है। गीत का मर्म वही समझ सकता है जो उसकी आत्मपरकता में अंतर्निहित मानवीयता की आवाज से भिज्ञ है। गीत वास्तव में काव्य का सबसे तरल रूप है व वाणी का द्रव है।

आज जब जीवन की रागात्मकता ही टूट गयी है, तब गीतों का प्रासंगिक रहना कहाँ सम्भव है?

लेकिन मेरा मानना है कि जीवन के बिखराव के इन खण्ड-खण्ड को भी गीतमय करना, जीवन के प्रति आस्था रखना, पुनः उर्जा का संचार कर देना! सृजनकर्ता औऱ सृजन का प्रमुख गुण है ।

कुटज,
जो पत्थरों में भी
जीवन खोजता है,
जीवन पर पताका फहराता है,
और
'जियो तो प्राण ढाल दो ज़िन्दगी में'
का संदेश देता है !!

यही मेरा मूलमंत्र है जीने का भी और सृजन का भी ।

"मीत रे,..." गीत संग्रह में कुछ छायावादी गीत, शृंगार गीत, प्रकृति गीत,देशभक्ति गीत , प्रेरणा गीत संग्रहित हैं।

आप सभी का स्नेह आशीष कलम को मिले इसी आशा के साथ.....!

रागिनी स्वर्णकार(शर्मा)

मीत रे

सुधियो के वन मे आज, साथ हो लें मीत रे।
अवगुंठन हृदय के हम, आज खोलें मीत रे।।

फुल्लकुसुमित सा हृदय हो,
महकती हों धड़कने।
अनुध्वनित सी भावनाये,
गीत की कड़ियाँ बने।।
अभिनन्दन है स्वजन मम,रोम बोले मीत रे।
अवगुंठन हृदय के हम, आज खोलें मीत रे।।

गीतगोविंद लिख लें,
भावनद के तीर पर।
प्रेमकथ्य, प्रेमगीत,
क्षण-क्षण तकदीर पर।।
हर्षित हैं दिग्दिगंत, यही होवे प्रतीत रे।
अवगुंठन हृदय के हम, आज खोलें मीत रे।।

आजा मेघा

आजा मेघा, प्यारे मेघा, प्यास बुझा जा मेरी।
तड़प रहें हैं, पँछी सारे, अब न करना देरी।।

सूख गयीं हैं नदियाँ सारी,
हैं सब सूखे ताल तलैया।
पौधे -पेड़ सभी हैं प्यासे,
हैं प्यासी कान्हा की गैया।

तरस करो, मनुहार सुनो हो गयी है पीर घनेरी,
आ जा मेघा, प्यारे मेघा प्यास बुझा जा मेरी।

चमन उजड़ गये तो समझो,
फूल नहीं खिल पायेंगे।
प्यासी - प्यासी हुई धरा जो,
कैसे फसल उगायेंगे।

हृदयों के रस सूख गये, होगी बदनामी तेरी।
आ जा मेघा, प्यारे मेघा, प्यास बुझा जा मेरी।

प्राण देकर शहीदों ने

प्राण देकर शहीदों ने सजाया देश को अपने,
स्वाभिमानी रहा, वो जान पाया देश को अपने।
देश भक्ति पर मर मिटे उन्हें, दौलत से नहीं तोल,
कलम आज उनकी जय बोल।

दहकने दे अंगारों को, यूँ ही अपने सीने में,
भूल न जाना रणवीरों को, सुख से अब जीने में।
आज तू अपने सृजन में फिर, केशरिया रंग घोल,
कलम आज उनकी जय बोल।

गीत रसीले दिल पर लिखना, जब भी तुम मन मीत,
फाँसी झूले वीरों की रखना, आँखों मे तस्वीर।
होली खेली थी शोणित से, लिखना पल वो अनमोल,
कलम आज उनकी जय बोल।

मुस्काने हैं महाकाव्य सी

दर्द के पनघट, प्यासे आँसू, प्यासी रह गयीं पीर,
महक रही है साँसों में मेरे प्रीत की एक लकीर।

डोरी रेशम जैसी थी एक टूट गया विश्वास,
फिर भी मन में जलते दीपक जैसी थी एक आस।
जुल्फों ने तुम्हे ऐसे बांधा, जैसे हो जंजीर। महक रही है,..

दोस्ती हमने की काँटों से महके सदा गुलाब,
नींदों में भी सजग रहे थे, रहे टूटते ख़्वाब।
शब्दों ने भी अर्थ दिए जब बनी गीत तक़दीर। महक रही है,..

धड़कन में एक नाम तुम्हारा हौंसला है भरपूर,
वरना अब तक तो हो जाते कब से चकनाचूर।
तू तो मेरा राँझा बन जा, मैं बन जाऊं हीर। महक रही है,..

प्रीत की धारा अविरल बहती प्यारा सा ये गाँव,
मौलश्री सी झरती बातें, शीतल चितवन छाँव।
मुस्काने हैं महाकाव्य सी नज़रे मीठे तीर। महक रही है,..

तुम याद बहुत आये

आकाश में बादल छाये
तुम याद बहुत आये, तुम याद बहुत आये।

अपलक सी ये निगाहें, फिर तक रही हैं राहें,
कैसे सँभाले कोई, निःशब्द सी ये आहें।
फिर याद में तुम्हारी, आँसू छलक ही आये।
तुम याद बहुत आये, तुम याद बहुत आये।

झरने का सुर निराला, मेरा जिगर जलाता,
लगता पुकार के ये, भी तुमको है बुलाता।
सावन का मास प्यारा, भी मुझको यूँ सताये।
तुम याद बहुत आये, तुम याद बहुत आये।

बिजली का ये चमकना, या बादलों का गर्जन,
लहरों का हो मचलना, या बारिशों की छनछन।
मौसम बड़ा सुहाना फिर क्यों न रास आये।
तुम याद बहुत आये, तुम याद बहुत आये।

नीर नयन में

नीर नयन में, पीर कलम में होते हैं,
गीत तभी हम बोते हैं।

चातक सी जब प्यास जगे,
जब चकोर सी आस सजे।
विरहित साँसों की डोरी, मोती शब्द पिरोते हैं,
गीत तभी हम बोते हैं।

स्पंदन में याद मचलतीं,
प्रति क्षण है प्रीत पिघलती।
मधुमास खोजते पतझर, मौन धैर्य जब खोते हैं,
गीत तभी हम बोते हैं।

नीर नयन में, पीर कलम में होते हैं,
गीत तभी हम बोते हैं।।

प्रीत ही हूँ गुनगुनाती

हो रही प्रिय मिलन आतुर, लिख रही हूँ प्रणय पाती।
प्रीत पथ अनुगामिनी मैं, प्रीत ही हूँ गुनगुनाती।।

स्वर मुखर होने लगे अब, साधना देती निमंत्रण।
सुधि सुमन महके हुये हैं, कर गयी पीड़ा पलायन।।
गीत लिखती भावनायें, धड़कनें है सुर मिलाती।
प्रीत पथ अनुगामिनी मैं, प्रीत ही हूँ गुनगुनाती।।

प्यास की पावन ऋचाऐं, स्वाति के कुछ कण पियेंगी।
तृप्तिक्षण, अनुभूतियाँ फिर, प्राण में भर कर जियेंगी।।
आस ही दीपक बनी, अन्तर तमस को जगमगाती।
प्रीत पथ अनुगामिनी मैं, प्रीत ही हूँ गुनगुनाती।।

निकला उम्मीदों का सूरज, छँट गये कुहरे घनेरे।
स्वर्णिम विहान बुला रहा है, डालती खुशियाँ है डेरे।।
मीत इन मधुरिम क्षणों में,सृष्टि ज्यों लगती बराती।
प्रीत पथ अनुगामिनी मैं, प्रीत ही मैं गुनगुनाती।।

तेरा सम्बल प्यारा लगता है

जग की पथरीली राहों में, तेरा सम्बल प्यारा लगता है,
पाकर एक परस पावन सा, क्षण-क्षण प्रीत सँवारा लगता है।

दर्पण भौंचक देखे मुझको, मांग सजा सिंदूरी सी,
चितवन चाह भरी न हो तो, जीवन साध अधूरी सी।
तार छेड़ न तू तन का, आकुल इकतारा लगता है।
तेरा सम्बल प्यारा लगता है।

हुलसित-विलसित शब्द-शब्द, तरुण-वरुण से भाव हुये,
गीत-वीत सब तेरे प्रीतम, छंद-बन्ध सम भाव हुये।
राह अंधेरी हो फिर भी, उजियारा लगता है,
तेरा सम्बल प्यारा लगता है।

रात पूर्णिमा सजी हुई सी, चाँद -चाँदनी सी बातें,
मेरे मन के मीत हुये तुम, उतरीं तन में बरसातें।
तुझसा बादल बरस गया, उपवन अब न्यारा लगता है,
तेरा सम्बल प्यारा लगता है।

उर पूजन का थाल हुआ

लगन लगी जब से प्रीतम से, मन अमृत का ताल हुआ।
हुई देह देवालय जैसी, उर पूजन का थाल हुआ।।

थाल लिए, ये खड़ी पुजारिन, करत आरती अँखियाँ हैं।
पारिजात के कुसुम खिलाती, तेरी अल्हड़ बतियाँ हैं।।
महक उठा तन, भाव मात्र से, गोरा मुखड़ा लाल हुआ।
हुई देह देवालय जैसी, उर, पूजन का थाल हुआ।।

लाल-लाल आंखों के डोरे, नेह तुम्हारा कहते हैं।
अश्रु बिंदु चुम्बन से मेरे, गाल-लाल से रहते हैं।।
रहती मैं मदमस्त न जाने, कैसा मीत कमाल हुआ।
हुई देह देवालय जैसी, उर पूजन का थाल हुआ।।

कुमकुम जैसे भाव हमारे, अक्षत तुम्हे चढ़ाते हैं।
तेरे गीत गूँजने लगते, जब ये पंछी गाते हैं।।
मन रंगता है प्रतिपल मेरा, तेरा परस गुलाल हुआ।
हुई देह देवालय जैसी, उर पूजन का थाल हुआ।।

दे जाता है उपहार मुझे

सुधियों में आ-आ कोई जब, करता जाता है प्यार मुझे।
अलकों-पलकों को महका कर, दे जाता है उपहार मुझे।।

पवन बने संगी उसका, छेड़े वो रह-रह आँचल को।
खग-गण भी उसके मीठे सुर, सरसाये मन मँदराचल को।।
स्वप्निल तंद्रा हावी रहती, मिलता उसका गलहार मुझे।
अलकों-पलकों को महका कर, दे जाता है उपहार मुझे।।

भासित होता है हास्य नवल, छलरहित मधुर मादक मुझको।
धवल दंत अवली दिखती, मन मुग्ध लगे साधक मुझको।
रग-रग को करके आलोकित, कर जाता सब बलिहार मुझे।
अलकों-पलकों को महका कर, दे जाता है उपहार मुझे।।

बतरस लालच में मनभावन, नित-नित ही खूब सताता है।
अवगुंठन खोलें ज्यों कलियाँ, अंतर्मन यूँ मुस्कुराता है।
नित नूतन रूप धरे मधुकर, लगता कोई कचनार मुझे।।
अलकों-पलकों को महका कर, दे जाता है उपहार मुझे ।।

पहली बार छुआ सावन ने

पहली बार छुआ सावन ने, देह लजीली लहक गयी।
सिंदूरी स्वप्नों की माटी, नेह बूँद से महक गयी।

भावों की अलबेली दुल्हन, प्रेम नगर से जब निकली,
रूप सलोना मनभावन सा, पावस पगडंडी फिसली।
आँख रसीली शरमीली सी, प्रिय से मिलकर बहक गयी,
सिंदूरी सपनों की माटी, नेह बूँद से महक गयी।

गीली-गीली वसुधा मन की, अंकुर प्रेम के उग आये,
पवन परस एक पावन सा, रह-रह कर अब सहलाये।
अधरों पर जो राग सजाया, मधुर रागिनी चहक गयी,
सिंदूरी सपनो की माटी, नेह बूँद से महक गयी।

सखियाँ ऊंचे पेंग हिंडोले, हिल डुल बेणी मदमाती,
लहराया आँचल मस्ती में, अलकें मोती बिखराती।
मयूरा नाच रहा कुंजन में, चंचल-चपला, चमक गयी,
सिंदूरी सपनो की माटी, नेह बूँद से महक गयी।

मन की कोकिल

जागती ही रही, रात मद से भरी
मन की कोकिल, विरह राग गाती रही।
तुम न थे, पर चकोरी भरी नेह से
चाँद होने का बस भास पाती रही।।

जो संजोये थे मन ने, मगन हो सपन।
विरह की आग में, हो गये वो हवन।
मालती ने पलक खोल, सिहरा दिया,
वो क्षितिज देख बुझता, ये मन का दिया।।
रात विश्वास थी, आसरा प्रीत का
भोर छाती रही, आस जाती रही।
तुम न थे, पर चकोरी भरी नेह से, चाँद होने का बस,..

है बनाने लगी, भोर रंगोलियाँ,
जा रही पात्र ले, मोहिनी टोलियाँ।
बाँसुरी पे बजी राग आसावरी
हो रही मुग्ध तरुवर की भी डालियाँ।
कूल कालिंदी पे छा गई रोशनी,
आँख मे वेदना झिलमिलाती रही।
तुम न थे, पर चकोरी भरी नेह से, चाँद होने का बस,..

सब कुछ ठहर गया लगता है

सब कुछ ठहर गया लगता है, क्षण-क्षण मुकर गया लगता है।

चाँद न हँसता, अश्रु बहाता, फूल सिसकता न मुस्कुराता।
सूर्य भी आता पर गुमसुम है, किरने भी कुछ उजली कम हैं।
चुभती रातें तन्हाई का, खंजर उतर गया लगता है।
सब कुछ ठहर गया लगता है, क्षण-क्षण मुकर गया लगता है,..

साँसों में है शीतलता सी, रूठी लगती पुरवाई भी।
कजरा, गजरा, चूड़ी, बाली, फीकी है अधरों पर लाली।
जब से प्रिय तुम हुए प्रवासी, दर्पण बिखर गया लगता है,
सब कुछ ठहर गया लगता है, क्षण-क्षण मुकर गया लगता है,..

लगी काटने संध्या वेला, मुरझाया सा पुहुप अकेला।
सविता आया आज मकर में, किंतु अकेली हाय सफर में।
कैसे हल हो कठिन पहेली, जियरा सिहर गया लगता है,
सब कुछ ठहर गया लगता है, क्षण-क्षण मुकर गया लगता है,..

भोर हुई, अलसायी रातें, संग ले गई स्वप्निल बातें।
बहता है बस जीवन नाला, मधुरस बिन रीता सा प्याला।
मेरा होना ज्यों मुझको ही, अब तो अखर गया लगता है,
सब कुछ ठहर गया लगता है, क्षण-क्षण मुकर गया लगता है,..

सुंदर पावन धरा भारती

भारत माँ की करो आरती। सुंदर पावन धरा भारती।।

प्राची में फैले जब कुंकुम, शीश नवाये दिनकर हरदम।
सुबह यहाँ की बड़ी निराली, अँगना नवरस से बुहारती।
सुंदर पावन धरा भारती।।

खड़ा हिमालय, जीवट प्रहरी, नदियाँ जिनमें, ममता गहरी।
सुरसरिता सी पावन नदिया, भवउदधि से पार उतारती।
सुंदर पावन धरा भारती।।

मधुमासों में मस्त धरा हो, लगती है जैसे अप्सरा हो।
लरजती है आम की डाली, कोयलिया जब है पुकारती।
सुंदर पावन धरा भारती।।

अभिनन्दन करते हैं भँवरे, तितलियों के पर हैं सुनहरे।
स्वच्छ सुगन्धित वायु बहती, स्वर्ग धरा पर है उतारती।
सुंदर पावन धरा भारती।।

संस्कृतियाँ मलयानिल चन्दन, भाषाएँ भी यहाँ हैं अनगिन।
हर घर है एक तीर्थ यहां पर, प्रेम से सबको है पालती।
सुंदर पावन धरा भारती।।

मैं गुहार अचानक कर बैठी

मनमोहक उर मनभावन सा, श्रृंगार अचानक कर बैठी।
अनुपम सी छवि पर मन मितवा, बलिहार अचानक कर बैठी।

दरस-परस की प्यासी अँखियाँ, छेड़ रहीं धड़कन सी सखियाँ।
पलक पाँवड़े बिछा रही थी, मनुहार अचानक कर बैठी।
अनुपम सी छवि पर मन मितवा, बलिहार अचानक कर बैठी।

भावों की अल्हड़ आतुरता, व्यथित हिरदय की व्याकुलता।
कह रही अबोली सी धड़कन, मैं प्यार अचानक कर बैठी।
अनुपम सी छवि पर मन मितवा, बलिहार अचानक कर बैठी।

मृदु वचनों से भीगा आँचल, नयन शरों से मनवा घायल।
बंदनवार सजे मन के दर, स्वीकार अचानक कर बैठी।
अनुपम सी छवि पर मन मितवा, बलिहार अचानक कर बैठी।

अक्षत नमन-वन्दन-चन्दन, स्मरण मनन अश्रु से आचमन।
बन याचक सी पिय तोर द्वार, गुहार अचानक कर बैठी।
अनुपम सी छवि पर मन मितवा, बलिहार अचानक कर बैठी।

मोहना तेरी छबि को मैने

साँसों पर लिख नाम तुम्हारा, मन ही मन में झूम लिया,
मोहना तेरी छबि को मैंने, चितवन से ही चूम लिया।

मौन निमंत्रण देती अँखियाँ, पीर हृदय में न्यार,
कदम्ब के नीचे खड़ी पुकारूँ, आजा मदन मुरारी।
मन ने तुझको ढूढ़ा वर्षों, अलियों-गलियों घूम लिया,
साँसों पर लिख नाम तुम्हारा, मन ही मन में झूम लिया।

प्रीतम पावन साथ तुम्हारा, साधना है ये युगों की,
वन्दन तेरा करती साधें, पुकार तू सुन ले रगों की।
तेरी मुरली बना कभी तन, कभी गीत बन गूँज लिया,
साँसों पर लिख नाम तुम्हार, मन ही मन में झूम लिया।

तुम्हे पुकारें यमुना के तट, कहती है कल-कल धारा,
रास रचाओ रमनबिहारी, सँवरे ये जीवन सारा।
कभी नेह की बरखा भीगी, कभी विरह, मन भूँज लिया
साँसों पर लिख नाम तुम्हारा, मन ही मन में झूम लिया।

न जाना दूर तुम मुझसे

सपन साकार अब जो हैं, वो फिर से टूट जायेंगें।
न जाना दूर तुम मुझसे, अधर मुस्कुरा न पायेंगे।।

सुबह भी बिन तुम्हारे तो,
सुहानी सी नहीं लगती।
न ही मुस्कुराता है सूरज,
ऊषा भी नहीं हँसती।।
बताओ कैसे फिर तुम बिन, हम खुशियाँ मनायेंगे।
न जाना दूर तुम मुझसे, अधर मुस्कुरा न पायेंगे।।

लिखें हैं गीत जो अब तक ,
मेरे दिल की किताबों में।
जिन्हें मैं गुनगुनाती हूँ,
सदा ही तेरी बाहों में।।
भला फिर किस तरह से हम, अपने ये स्वर सजायेंगे।
न जाना दूर तुम मुझसे, अधर मुस्कुरा न पायेंगे।।

गीत प्रणय के कैसे गायें

गीत प्रणय के कैसे गायें

अम्बर पर घिर रही घटाएँ, यादें दिल से दे रहीं सदायें।
बूँदें तीर चुभें तन-मन पर, प्राणों का पँछी अकुलाए।
गीत प्रणय के कैसे गाये।

जुल्फे भीगी चातक जैसी, आलिंगन कि याद दिलायें।
बिजली कड़के, धड़के मन, कानाफूसी करे हवाऐं।
गीत प्रणय के कैसे गायें।

श्यामल घूघट से चंदा झांके, अठखेली कर-कर के भागे।
करे इशारा मीठा प्यारा, नृत्य कर उठी अभिलाषाऐं।
गीत प्रणय के कैसे गायें।

प्रियतम के पथ नयन बुहारे, झड़ी प्रेम की चितवन झारे।
मिलन यामिनी की सुधि में, पर्दे हटा रही प्रत्याशाएँ।
गीत प्रणय के कैसे गाएँ।

जब मधुर सुहानी भोर हो

प्राची में बिखरे कुंकुम,
रतनार नयन मन हो जाये।
आलोकित उर अर्णव मुख,
तम तोम सहमकर रह जाये।
भोर कटोरी, हो मधु बोरी, सुरभित अम्बर छोर हो,
जब मधुर सुहानी भोर हो।

आशाओं की विकसे कलियाँ,
उत्साह उरों में मुस्कुराये,
खग–कुल, कुल-कुल बोल उठे,
नयन विहाग से अलसाये।
अम्बर के पनघट में जब, ऊषा देती तारक घट बोर हो,
जब मधुर सुहानी भोर हो।

ऊषा अंशुक, शुभग-शुभंकर,
स्वर्णिम आभा बिखराये।
हौले-हौले उतर अवनि पर,
इठलाती क्षिति से आये।।
रश्मिरथी सी उजली-उजली, विश्वासों की डोर हो,
जब मधुर सुहानी भोर हो।

सुबह लगे सोनाली सी

प्राची ने सिंदूर बिखेरा, ऊषा आने वाली सी।
तुहिन कणों से भीगी-भीगी, शीतल सुबह निराली सी।।

खगकुल कुल-कुल कलरव करते, निकले सभी घोसलों से।
नहीं थकेंगे यह प्रण लेकर, भर परवाज़ हौसलों से।।
लता लिये मधुघट है आयी, नवरस से भरने देखो।
ख़ुश्बू लिये हवायें आईं, किरणों के झरने देखो।।
शीत लहरियाँ खेल रहीं, कुल्लू और मनाली सी।
तुहिन कणों से भीगी-भीगी, शीतल सुबह निराली सी।

स्वागत आतुर हरसिंगार है, आसन नये बिछाये हैं।
फूल झरे देखो वसुधा पर, महुआ मन महकाये हैं।।
फैल गयी खुशहाली जग में, अंधकार प्रभहीन हुआ।
रौशनी ने रची रंगोली, दिनकर भी तल्लीन हुआ।।
अद्भुत लगे नज़ारा देखो, सुबह लगे सोनाली सी।
तुहिन कणों से भीगी-भीगी, शीतल सुबह निराली सी।

सावन रूप बहार

सखी ! घन आनन्द लायो री, सावन रूप बहार।
हरियाली छाई जगती में, अनुपम छटा निखार।।

पुलक-पुलक हुलसित बगरत, तरुणी करत श्रृंगार।
पारिजात के धवल पुष्प, मदिरा लगे बयार।
सखी ! घन आनन्द लायो री, सावन रूप बहार।।

झिमिर-झिमिर बरसत बदरा, पोर-पोर रसधार।
सुखद सुवासित गंध सुगन्ध, अंग-अंग अंगार,
सखी ! घन आनन्द लायो री, सावन रूप बहार।

खैंच कमान अनंग सजे हैं, देह झरे अंगार।
पायल पग में, पारिजात पथ, प्रीतम ले न निहार।
सखी ! घन आनन्द लायो री, सावन रूप बहार।।

दो लफ्जों की है दिल की कहानी

दो लफ्जों की, दिल की कहानी,
प्यार ही जीवन, प्यार है रवानी।।

आओ मेरे प्रीतम आओ, साँसों को तुम महका जाओ।
मौन हुई छुईमुई जैसी, दिल गौरैया चहका जाओ।।
मुस्कराये फिर ये जिंदगानी,
प्यार ही जीवन, प्यार है रवानी।।

सिंदूरी सपनों सी चूनर, सुभग सुहानी लगती सुन्दर।
रलमल अलकों की अटखेली, उषा संग मुस्काता दिनकर।
खारा माया मृगजल पानी,
प्यार ही जीवन, प्यार है रवानी।

भावों के इस मधुवन आना, छंद-छंद सा मन पढ़ जाना।
सृजन साधिका हूँ मैं व्याकुल, प्रीत-गीत रस रच रम जाना।
मीरा सी मैं हुई दीवानी,
प्यार ही जीवन, प्यार रवानी।

जबसे तुम आये जीवन में

मन लगता है महाकाव्य सा, सावन मनभावन लगता है।
जबसे तुम आये जीवन में, हर दिन पावन सा लगता है।

रोम-रोम में जुही चमेली,
पोर-पोर बेला अलबेली।
अंग-अंग में रजनीगंधा,
चितवन मोलश्री संग खेली।
भावनाओं का मानसरोवर, हर एक भाव भजन लगता है।
जबसे तुम आये जीवन में, हर दिन पावन सा लगता है।

य़ादें तुम्हारी मुस्कुराती हैं,
जीवन राग जगा जातीं है।
कानों में मिश्री सी घोलें,
बातें छन्द रचा जातीं हैं।
प्रीत तुम्हारी कान्हा की गीता, वंदन वृंदावन लगता है।
जबसे तुम आये जीवन में, हर दिन पावन सा लगता है।

पल में सदियाँ जी लेती हूँ

चितवन में ऋतुएँ रमती हैं, बसन्त अधर से पी लेती हूँ।
करती मृत्यु का मन से स्वागत, पल में सदियाँ जी लेती हूँ।

यादों की बदली में छिप कर,
आशाएं मन्द-मन्द मुस्कुराती।
हौंसलें बुलन्द दरवाजे से,
जंग ज़िन्दगी की लड़ जाती।
अनन्त उत्साह भरे आँचल में, दिल पर यूँ दस्तक देती हूँ।
करती मृत्यु का मन से स्वागत, पल में सदियाँ जी लेती हूँ।

सावन से मदमाते सपने,
गीतों को तर कर जाते हैं।
पपीहे से व्याकुल मन से,
शब्द कलश धर-धर जाते हैं।
मुस्कानों से महाकाव्य लिख, मुश्किल आसां कर देती हूँ।
करती मृत्यु का मन से स्वागत, पल में सदियाँ जी लेती हूँ।

चितवन वन्दन करती है

मन है महाकाव्य सा मेरा, धड़कन मुक्तक रचती है।
मलय सुवासित श्वाँस गंधिता, चितवन वंदन करती है।।

रोम-रोम है रजनीगन्धा, अंग - अंग सिंदूरी है।
पीर विरह की बनी अर्चना, पूजन साध अधूरी है।।
शृंगारित मन मेरा साजन छवि दर्पण से कहती है।
मलय सुवासित श्वाँस गंधिता चितवन वंदन करती है।।

स्वप्न बीज बोया करते थे, तुम इस भोले से मन में।
प्रीत गीत बन महक लहकते आज सृजन के उपवन में।।
याद तुम्हारी व्यथित क्षणों को पल में मधुवन करती है।
मलय सुवासित श्वाँस गंधिता चितवन वंदन करती है।।

सुरसरिता के पुलिन तटों पर भुजबन्धन वह प्यारे से।
नेहिल स्वप्निल परस पे सर्वश अपना, हम थे हारे से।।
मेरे मन की अकथ रागिनी स्वर संग नर्तन करती है।
मलय सुवासित श्वाँस गंधित, चितवन वंदन करती है।।

प्रेमनिवेदन प्रथम तुम्हारा, याचक चातक सा बोले।
लगे झूमती स्मृति सुहानी, प्रेम डली तन में घोले।।
स्वाति बूँद अव्यक्त प्रीत की, लघु पलकों से झरती है।
मलय सुवासित श्वाँस गंधिता, चितवन वंदन करती है।।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - रागिनी स्वर्णकार (शर्मा)
जन्मतिथि - 01.05.1972
जन्मस्थान - बेगमगंज (रायसेन)
माता-पिता - श्रीमती पार्वती सोनी -श्री पूरनचंद सोनी
पति - श्री अरुण शर्मा
पुत्र - कार्तिकेय 12 वर्ष
वर्तमान पता - डायमंड रेसीडेंसी, सिलिकॉन सिटी, राऊ इन्दौर (मध्यप्रदेश)
पद - हिन्दी व्याख्याता (शास. महाविद्यालय में)
शिक्षा - बी.एस.सी., एम.ए., (हिन्दी साहित्य, इंग्लिश लिटरेचर) एम.एड. शोध कार्यरत।
विधा - गीत, मुक्तक, दोहे, अतुकांत, गज़ल, छंद, हाइकू, बालकविता, एवं लेख।
मो.नं. - 9754835741
ई मेल - ragini1572@gmail.com
कार्य पद - 'संकल्प'शालेय पत्रिका का सम्पादन सतत् 8 वर्ष से।
साहित्य संपादक :- संचार एक्सप्रेस (साप्ताहिक), निशात टाइम्स (साप्ताहिक)।
मध्यप्रदेश प्रभारी:- साहित्य पत्रिका 'सवेरा' साहित्य संगम राजस्थान द्वारा प्रकाशित
सह सम्पादक :-' हिन्दी सागर' पत्रिका विश्व हिन्दी रचनाकार मंच नई दिल्ली
मेम्बर :- एन्टीकरप्शन फाउंडेशन ऑफ इंडिया।
प्रकाशन लोक जंग, वर्तमान, अंकुर, सवेरा, पत्रिका, धार भास्कर, नई दुनिया, देशबंधु
रीडर एक्सप्रेस में रचनाएं प्रकाशित, बेटियॉ (काव्य संग्रह)- अंतरा प्रकाशन
रंगोली पत्रिका उ.प्र., शब्द शिल्पी (सतना), हिन्दी सागर (दिल्ली), सवेरा (इंदौर)
साहित्य संगम में रचनाएं प्रकाशित।
पुस्तकें साझा संग्रह - भारत के युवा कवि एवं कवयित्रियां (विश्व हिन्दी रचनाकार मंच)
अभ्युदय काव्य माला साहित्य संगम संस्थान द्वारा, 'नारी से नारी तक' वुमन आवाज,
संग्रह- प्राण ढाल दो ज़िन्दगी में (म.प्र. साहित्य अकादमी भोपाल के सहयोग से)
सम्मान - हिन्दी सागर सम्मान, श्रेष्ठ युवा कवियत्री सम्मान (विश्व हिंदी रचनाकार मंच),
साहित्य अभ्युदय सम्मान (साहित्य संगम संस्थान),
शीर्ष साहित्य परिषद भोपाल द्वारा सम्मानित

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी,
जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१,
संपर्क- ९४२४७६५२५९,
अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com
978-93-86666-70-3
मूल्य- 60/-